कुलगीत
(आईएफटीएम विश्वविद्यालय)

ज्ञान पुंज ज्योतिर्मय किरणें,
धारण किए शान्ति कण कण में।
विश्वविद्यालय का भवन मनोरम, – 2
नमन है तुझको आईएफटीएम।।

विद्या, बुद्धि और कठिन परिश्रम,
इन तीनों का है ये संगम।
ज्ञान अर्जन और कला का, – 2
अति मनोहर दिव्य उद्‌गम।
ओंकार का है ये तपोवन।– 2
नमन है तुझको आईएफटीएम।। – 2

अन्धकार को जीत रहा है,
भविष्य राष्ट्र का सींच रहा है।
देकर स्वावलम्बन का गुण, – 2
कौशल सुलभ सुनीति रहा है।
नित शिक्षण का करता मंथन। – 2
नमन है तुझको आईएफटीएम।। – 2

सर्वपंथ का स्वागत करती,
भेदभाव न किसी से करती।
प्रगति पथ पर चलती निरन्तर, – 2
ज्ञान सृजन की है ये धरती।
हृदय से करते हम अभिनंदन। – 2
नमन है तुझको आईएफटीएम।। – 2

विद्या दायिनी हंस वाहिनी,
सरस्वती माँ बुद्धि प्रदायिनी।
इस प्रांगण के तुम कण कण में, – 2
विद्यमान हो माँ सुखदायिनी।
पाकर पुलकित है ये तनमन। – 2
नमन है तुझको आईएफटीएम।। – 2

रूहेलखण्ड के नभ पर देखो,
पूर्ण तेज से दमक रहा है।
पीतल नगरी के ललाट पर, – 2
ये दिनकर सा चमक रहा है।
कर रहा है नित ज्ञान का सृजन। – 2
नमन है तुझको आईएफटीएम।। – 3

दिनांकः 06.09.2019

रचयिता
कुलगीत समिति(पूर्वछात्र), आईएफटीएम विश्वविद्यालय
मुरादाबाद।